आइआइएम रांची ने 10 प्रतिशत सीटों पर लिया दिव्यांगों का नामांकन

आइआइएम रांची में इस सत्र यानी 2025-27 में एक बेहतरीन पहल करते हुए एमबीए कोर्स में कुल 47 दिव्यांगों का नामांकन लिया गया. एमबीए कोर्स में नामांकन के लिए कुल स्टूडेंट्स का लगभग 10 प्रतिशत है. शैक्षणिक और कॉर्पोरेट जगत में सामाजिक एकरूपता को बढ़ावा देने के उद्देश्य के साथ यह पहल की गयी है. इसमें 30 छात्र-छात्राओं को लोकोमोटर (चलने-फिरने) से जुड़ी दिक्कतें हैं. इसके अलावा कई को डिस्लेक्सिया, दृष्टिबाधिता, थैलेसीमिया, सिकल सेल एनीमिया, मानसिक बीमारी जैसी समस्याएं हैं. कई समस्या होने के बावजूद भी इनके हौसले व जूनन में कोई कमी नहीं है. ये भी आम छात्र-छात्राओं की तरह मैनेजमेंट एजुकेशन प्राप्त कर रहे हैं. विभिन्न आयोजनों में अपना हुनर भी दिखाते हैं.

कद तीन फीट, सपने आसमान तक

मूल रूप से तमिलनाडु के रहने वाले अभिषेक का कद तीन फीट है. जन्म से पहले ही डॉक्टर ने बताया कि हड्डियां ठीक तरह नहीं बन रही थीं. लेकिन, उनके माता-पिता ने डर के बजाय उम्मीद चुनी. अभिषेक ने कभी अपनी कमी को रुकावट नहीं बनने दिये. उन्होंने सामान्य स्कूल से पढ़ाई की. अकाउंटिंग और फाइनेंस में ग्रेजुएशन किये.

बड़ी कंपनी में काम चाहते हैं विनायक

ओडिशा के रहने वाले विनायक को स्नातक के दौरान सुनने और बोलने में दिक्कतें होने लगीं. परिवार के सहयोग और हाई-फ्रीक्वेंसी हियरिंग डिवाइस की मदद से उन्होंने अपने आप को ढाला और आगे बढ़े. अब वे मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रहे हैं और बड़ी कंपनी में काम करना चाहते हैं.

कई चुनौतियां, पर हिम्मत नहीं टूटी

हैदराबाद में जन्मे नरसिम्हन के दाहिने पैर में दिक्कत थी. स्पाइनल व न्यूरोलॉजिकल समस्याएं भी हुई. उन्होंने पढ़ाई जारी रखी. बीकॉम किया. उन्हें फिल्मों में भी रुचि थी. उन्होंने तेलुगू शॉर्ट फिल्म भी बनाये. अब आइआइएम से पढ़ाई कर मैनेजमेंट सेक्टर में काम करना चाहते हैं.

हाथ-पैर कट गया पर हिम्मत नहीं हारे

जावेद खान का वर्ष 1991 में ट्रेन हादसे में दाहिना हाथ और दाहिना पैर कट गया. तब वे दस साल के थे. फिर से चलने की ठानी. जयपुर फुट की मदद से उन्होंने चलना सीखा, फिर दौड़ना. वे क्रिकेट खेलते, रीवर राफ्टिंग और पैराग्लाइडिंग तक कर डाली. आइआइएम में पढ़ाई कर बेहतर काम करना चाहते हैं.

Prabhat Khabar_03.12.2025_P. 6